श्रेया शांडिल्य

समर्थन से विभिन्नता तक: नागार्जुन और धूमिल की राजनीतिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

परिचय (नागार्जुन और धूमिल पर विचार)

वैद्यनाथ मिश्र, जिन्हें 'नागार्जुन' के रूप में व्यापक रूप से जाना जाता है, एक प्रमुख हिंदी कवि और साहित्यिक व्यक्ति थे। उनकी रचनाएं विचारशीलता, दुःख, और सामाजिक जागरूकता को सूचीबद्ध रूप से अभिव्यक्त करती हैं। नागार्जुन ने अपनी कविता सृष्टि में भारतीय समाज और राजनीति के प्रति अपने दार्शनिक स्थान को प्रस्तुत किया, जीवन के संवर्धित मुद्दों पर साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से चर्चा करते हुए।

सुदामा पांडेय 'धूमिल', एक और महत्वपूर्ण हिंदी कवि, ने अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन की असलियत को स्पष्टता से प्रस्तुत किया। धूमिल की कविताएं अपनी अद्वितीय भाषा और विस्तारशील दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं, और उन्होंने समाज, राजनीति, और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनके साहित्यिक योगदान आज के समय के जीवन-सामाजिक परिस्थितियों के आवश्यकताओं और चुनौतियों की सुजान में अपना विशेष स्थान बनाए रखा है।

नागार्जुन का राजनीतिक चिंतन

नागार्जुन जब आम आदमी की बात करते हैं तो वह राजनीति की चर्चा में चला जाता है। यह देशभक्ति, सरकारी नीतियों पर चिंतन या सामाजिक संरचनाओं की आलोचना के रूप में प्रकट हो सकता है। इसके अलावा, इसका विस्तार लोकतंत्र के संरक्षण तक भी है। नागार्जुन संभवतः अपने समय के उन चुनिंदा कवियों में से थे जो अपने युग के राजनीतिकरण के प्रति गहराई से जागरूक हो रहे थे और एक जन कवि के रूप में उन्होंने इसे संबोधित किया। नागार्जुन की कविताओं में एक स्पष्ट समकालीनता झलकती है। उनकी कविता की सामयिकता उनकी व्यावहारिक राजनीतिक समझ को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। उनकी कविताओं को केवल तात्कालिक समय के लिए प्रासंगिक या वर्तमान समय में अप्रचलित मानना उचित नहीं है। अनिवार्य रूप से, कवि के व्यक्तित्व की व्याख्या के लिए उसके साहित्यिक कोष की संपूर्णता के भीतर इसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। फलस्वरूप, उनके काम की समसामयिकता के बारे में ग़लतफ़हमी दूर हो गई। नागार्जुन बौद्ध दर्शन से प्रभावित हैं, जिसकी अनुगूंज उनकी कविताओं में स्पष्ट है। यह प्रभाव उनके आधुनिक परिप्रेक्ष्य, बौद्धिक कौशल और राजनीतिक चेतना में स्पष्ट रूप से उजागर होता है।

धूमिल का राजनीतिक चिंतन

सुदामा पांडे, जो हिंदी कविता में प्रणालीगत उत्पीड़न की आलोचना के लिए प्रसिद्ध हैं और जिन्हें हिंदी साहित्य का 'एंग्री यंग मैन' कहा जाता

 ISSN:2583-8849

है, छद्म नाम 'धूमिल' के तहत साहित्यिक क्षेत्र में सामने आते हैं। धूमिल की भाषा हिंदी कविता की पारंपरिक वंशावली से अलग है। वह कविता के दायरे में भाषाई रूढ़िवादिता को तोड़ते हैं, मार्मिक छंदों को एक चमकदार भाषा में व्यक्त करते हैं जो जनता की पीड़ा और पीड़ा से उभरती है। उनके अनुसार, सार अभिव्यक्ति की कला में नहीं बल्कि कथा के सार में निहित है। धूमिल ने अपने कार्यों में सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को विशेष रूप से लक्षित किया। उनकी कविता "मोचीराम" समकालीन सामाजिक चेतना की एक महत्वपूर्ण और सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में खड़ी है-

"बाबूजी सच कहूँ-मेरी निगाह में

न कोई छोटा है

न कोई बड़ा है

मेरे लिये,हर आदमी एक जोड़ी जूता है

जो मेरे सामने

मरम्मत के लिये खड़ा है।

और असल बात तो यह है

कि वह चाहे जो है

जैसा है,जहाँ कहीं है

आजकल

कोई आदमी जूते की नाप से

बाहर नहीं है"[i]

तुलनात्मक विश्लेषण

धूमिल और नागार्जुन, दोनों ही अपने तीक्ष्ण व्यंग और सटीक शब्दों के लिए प्रचलित हैं। धूमिल ने अपनी अधिकांश कविताओं में मानवीय धरातल के यथार्थ से राजनीति का विश्लेषण किया है, जबकि नागार्जुन की कविताओं में शैली में विविधता है। राजनैतिक विषयों पर उन्होंने कम लिखा है, लेकिन जो लिखा है, वह सत्य है।

तुलना की दृष्टि से, विद्रोही चेतना का संचार दोनों के शब्दों में है, लेकिन जहां नागार्जुन अपने विचारों को खुलकर रखते हैं, उन्हें जिसकी सोच और क्रियाओं से कष्ट होता है, वह डंके की चोट पर उन्हें अपने व्यांगपूर्ण शैली में दुत्कारते हैं। चाहे वह

"आओ रानी, ढोवेंगे हम पालकी"[ii]

हो जहां तत्कालीन समय में जवाहरलाल नेहरु के इंग्लैंड की रानी के स्वागत करने का संदर्भ साफ़ साफ़ झलकता है, क्योंकि अगली ही पंक्ति कहती है

"यही है राय जवाहरलाल की"

या फिर इंदिरा गांधी के समय में लागू हुआ आपातकालीन पर आधारित "शासन की बंदूक" जहां पूरे राजनीतिक समाज में इंदिरा गांधी के इस निर्णय की थू थू हुई थी।

"उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक,

जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक"[iii]

नागार्जुन केवल यहीं नहीं रुकते। इस कविता में उन्होंने उनपर भी निशाना साधा जो समय आने पर प्रभावशाली होने का दावा करने पर भी मौन दर्शक बनकर रह गए

"बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक

धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक"

दूसरी ओर, हम धूमिल को पाते हैं जो व्यवस्था से स्वयं परेशान हैं, मगर किसी कारणवश खुलकर उसका विरोध नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने व्यक्तिगत व्यंग के स्थान पर व्यवस्थायिक व्यंग की हैं।

"मेरे देश का समाजवाद

माल गोदाम में लटकी हुई

उन बाल्टियों की तरह है

जिस पर 'आग' लिखा है

और उनमें बालू और पानी भरा है।"[iv]

वह प्रश्न आवश्यक कर रहे हैं, मगर व्यवस्था चलाने वालों पर नहीं

"एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ—

'यह तीसरा आदमी कौन है ?'

मेरे देश की संसद मौन है।"[v]

जितना प्रभावशाली यह प्रश्न है, उतने ही प्रभावशाली इसके शब्द हैं, मगर केवल एक मात्रा की कमी ने अपराधियों को भीड़ में छुपा दिया। धूमिल कहते हैं

"कुर्सियां वही हैं

केवल टोपियां बदल गई हैं"[vi]

संभवत: अगर टोपियों के नीचे आने वाले सिर पर सीधा प्रहार हुआ होता तो उनके प्रयास विफल न होते। यह सत्य है कि उनकी कविता का एक पक्ष क्रांतिकारी चेतना है मगर दूसरा पक्ष उसे धुंधला कर देता है जब उन कविताओं के शब्द स्पष्टता के अभाव में कहीं न कही दब जाती है।

निष्कर्ष

धूमिल और नागार्जुन, दोनों ही कवियों ने अपनी कलम से समाज, राजनीति, और व्यवस्था पर अपनी दृष्टि रखी है। नागार्जुन विविध शैली में राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं, जबकि धूमिल का व्यंग्यपूर्ण दृष्टिकोण व्यवस्था की दिक्कतों को सामने लाता है। उनकी कविताएं समाज में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करती हैं, परंतु उनके शब्दों में स्पष्टता की कमी हो सकती है। इस विरोधाभासी दृष्टिकोण से हमें यह सिखने को मिलता है कि कविता के माध्यम से समाज को सत्य की ओर मोड़ना महत्वपूर्ण है, लेकिन शब्दों की स्पष्टता से ही उसका सही प्रभाव हो सकता है।

ग्रन्थसूची

[i] मोचीराम - सुदामा पांडे 'धूमिल'

[ii] आओ रानी, धोएंगे हम पालकी- नागार्जुन

[iii] शासन की बंदूक- नागार्जुन

[iv] पटकथा- सुदामा पांडे 'धूमिल'

[v] संसद से सड़क तक - सुदामा पांडे 'धूमिल'

[vi] पटकथा- सुदामा पांडे 'धूमिल'

परास्नातक (हिंदी), द्वितीय वर्ष

वसंत कन्या महाविद्यालय,

काशी हिंदू विश्वविद्यालय।